प्रजापत्यादीनां शरभागाः —

तेषां क्रमाद्गोशिखिनः खरामा-
अष्टौ रसाश्वाः शिखिनः खवेदाः।
शरांशकाः स्युर्मुनिलुब्धयोस्तु
याम्यास्तु सौम्याः परिशेषकाणाम् ॥

अन्वयः – गोशिखिनः खरामाः अष्टौ रसाश्वाः शिखिनः खवेदाः क्रमात् तेषां शरांशकाः स्युः। मुनिलुब्धयोः तु याम्याः, परिशेषकाणां तु सौम्याः।

तारा – गोशिखिनः ३८, खरामाः ३०, अष्टौ ८, रसाश्वाः ६६, शिखिनः ३, खवेदाः ४० क्रमात् तेषाम् इमे शरांशकाः स्युः। मुनेः अगस्त्यस्य, लुब्धकस्य च दक्षिणशराः भवन्ति, परिशेषकाणं तु सौम्याः उत्तरशराः भवन्ति।

भावार्थः — ३८, ३०, ८, ६६, ३, ४० ये क्रमशः शरांश हैं। इनमे अगस्त्यमुनि तथा लुब्धक के दक्षिणशर होते हैं तथा शेष के उत्तरशर होते हैं। इनके उदयास्त ध्रुवों का साधन अश्विनी आदि नक्षत्रों की रीति से करना चाहिए।

प्रजापत्यादिध्रुवशरादितालिका

नामानि	ध्रुवाङ्काः		शरांशाः		उदयध्रुवः				अस्तध्रुवः			
	राशि	अंश	शर	दिशा	राशि	अंश	कला	विकला	राशि	अंश	कला	
प्रजापति	२	१	३८	उत्तर	१	१२	१८	४५	२	१८	४१	१५
ब्रह्महृदय	१	२६	३०	,,	१	११	८	४५	२	१०	५१	१५
अग्नि	१	२३	८	,,	१	१८	१०	०	१	२६	५०	०
अगस्त्य	२	२०	६६	दक्षिण	३	२६	२५	०	१	१३	३५	०
अपांवत्स	६	३	३	उत्तर	६	१	३३	४५	६	४	२६	१५
लुब्धक	२	२१	४०	दक्षिण	३	१०	१०	०	२	१	५०	०

नक्षत्रच्छायाधिकारः

नक्षत्रच्छायादिसाधनप्रकारः—

निजदेशभवाद् ध्रुवाच्च बाणाच्छाया यन्त्रलवादि खेटवत्स्यात्।
छायादेरपि चेह रात्रियातं नक्षत्रग्रहयोग उक्तवच्च॥

अन्वयः— निजदेशभवात् ध्रुवात् बाणात् च छाया यन्त्रलवादि खेटवत् स्यात्। अपि च इह छायादेः रात्रियातं, नक्षत्रग्रहयोगः च उक्तवत्।

टीका— निजदेशभवात् आक्षदृक्कर्मसंस्कृतात्, ध्रुवात्, बाणात्, च छाया यन्त्रलवादि खेटवत् स्यात्। अपि च इह छायादेः रात्रियातं, नक्षत्रग्रहयोगः च उक्तवत् नक्षत्रच्छायाधिकारे, छायादेः अपि, रात्रियातं, ग्रहखेदेव स्यात्। नक्षत्रग्रहयोगश्च उक्तवद् ग्रहयोगवज्ज्ञेयः।

भावार्थ:— अपने देश के ध्रुव और शर से ग्रहच्छायाधिकारोक्त रीति से छायायन्त्रभाग आदि का साधन करें। छाया आदि से रात्रिगत समझें और नक्षत्रग्रहयोग को ग्रहयुति के समान समझें।

श्रीनृसिंह दैवज्ञ ने अपने करण ग्रन्थ में उसका इस प्रकार निर्देश किया है—

'ध्रुवशरमध्रुवकान्तरलिप्तिका द्युगतिभुक्तिहृता हि गतागतैः।
फलदिनैर्ध्रुवकेऽधिकहीनके युतिरिहेतरथा खलु वक्रिणि'॥

अर्थात् ग्रह और नक्षत्र का ध्रुव इन दोनों का अन्तर करके उसकी कला बनाये। उन कलाओं में ग्रह की गति का भाग दें। जो लब्धि मिले वह दिनादि गति होती है। उसके बाद यदि नक्षत्र ध्रुव की तुलना में ग्रह संख्या अधिक हो तो उस ग्रह को उस नक्षत्र में आये हुए लब्धि में आयी हुई संख्या के बराबर दिन बीत चुके हैं, ऐसा समझें। यदि ग्रह नक्षत्र ध्रुव की तुलना में कम हो तो लब्धि के बराबर दिनों में वह ग्रह उस नक्षत्र में आयेगा ऐसा समझें। यदि ग्रह वक्री होकर नक्षत्र ध्रुव की तुलना में अधिक या कम हो तो फल उपर्युक्त निर्णय के विपरीत होता है। अर्थात् यदि अधिक हो तो लब्धि के बराबर दिनों के बीत जाने पर ग्रह नक्षत्र के मध्य में आयेगा और यदि कम हो तो ग्रह को नक्षत्र में आये हुए लब्धि के बराबर दिन बीत चुके हैं, ऐसा समझें।

शास्त्री-III

प्रजापत्यादीनां ध्रुवांशाः —

प्रजापतिब्रह्महृदग्न्यगस्त्याऽपांवत्सलुब्धध्रुवकांशकाः स्युः।
कुषट् षडक्षास्त्रिशरा नगोडयटौ त्र्यष्टेन्दवो भूफणिनः क्रमेण ॥

अन्वयः — कुषट् षडक्षाः त्रिशराः नगोडयटौ त्र्यष्टेन्दवः भूफणिनः क्रमेण प्रजापति-ब्रह्महृद्-अग्नि-अगस्त-अपांवत्स-लुब्धक-ध्रुवाङ्काः स्युः।

तारा- कुषट् ६१, षडक्षाः ५६, त्रिशराः ५३, नगोडयटौ ८०, त्र्यष्टेन्दवः १८३, भूफणिनः ८१ क्रमेण प्रजापत्यादीनां ध्रुवांशाः स्युरिति. विशदम्।

भावार्थ :- ६१, ५६, ५३, ८०, १८३, ८१ ये क्रमशः प्रजापति, ब्रह्महृदय, अग्नि, अगस्त्य, अपांवत्स और लुब्धक इनके ध्रुवांक होते हैं। इनमे ३० का भाग देने पर लब्धि राशि तथा शेष अंश होता है। इस प्रकार प्रजापति के २ राशि १ अंश, ब्रह्महृदय के १ राशि २६ अंश, अग्नि के १ राशि २३ अंश, अगस्त्य के २ राशि २० अंश, अपांवत्स के ६ राशि ३ अंश और लुब्धक के २ राशि २१ अंश होते हैं।

डॉ० सुदिवर कुमार
सहा०प्राचार्य (ज्योतिष)
रा०उ०सं०महावि० सुखसेना,
पूर्णियाँ।